

सूचना और अनुभव में अन्तर



हम जो कुछ देखते हैं, पढ़ते हैं, सुनते हैं, कोई सूचना के माध्यम से हमारे अन्दर रहती है। लेकिन अगर वो सूचना को थोड़ा व्यावहारिक रूप से प्रयोग में लाते हैं तो उसको हम ज्ञान या समझ कहते हैं। उदाहरण के लिए, जैसे आग जलाती है, पानी ठंडा होता है, ये लिखित है सूचनाएं। लेकिन जैसे ही आग में आपका हाथ जाता है तो गर्मी की वजह से लगता है कि हाँ, सच में आग जलाती है। वैसे ही पानी जरा ठंडा लगा, पीने से शीतलता आई तो हाँजी पानी ठंडा होता है, ऐसा हम विश्वास कराते हैं। इसी विश्वास को समझ हम कहते हैं या उसका अनुभव होना अब हम बिना सोचें भी ये कह सकते हैं कि आग और पानी इस-इस नेचर के हैं।

ऐसे ही हम सभी को परमात्मा ने एक सूचनात्मक ज्ञान दिया, समझ दी, समझाया कि दो अइडेंटिटी या दो तस्वीरें हम लोग हैं एक आत्मा और एक शरीर। लेकिन ये सूचना ही रहे या केवल इसको हमने जानने तक सीमित रखा तो इस बात का अनुभव नहीं हुआ कि आत्मा अलग है और शरीर अलग है। अब इसको हम सामान्य भाषा में समझते हैं। शारीरिक अनुभव क्या होगा? जैसे हम किसी को देखते हैं तो जो कुछ भी उसमें अपने शरीर माना अपने बाहरी आवरण से

प्राप्त किया, अचीव किया है, और उसके द्वारा वो जाना जा रहा है, पहचाना जा रहा है। उसके द्वारा वो खुश होता है, नाराज होता है, तो ये इसकी बाहरी अनुभूति उसको शरीर के साथ जोड़ती है।

इसकी दूसरी तरफ जायें तो हम देखेंगे कि आत्मा शुरू से जीरो रही है, बिन्दु रही

जो कुछ भी हम बाहर की चीजें देखते हैं या प्राप्त करते हैं या अटेन करते हैं तो उसके साथ खुद को जोड़ लेते हैं। तो जब उसकी तारीफ या बुराई होती है तो हमें बुरा या अच्छा लगता है। अब जब हम इसका अनुभव करेंगे तो उसके ऑरिजिनल फॉर्म के आधार से अनुभव करते हैं। मतलब



है। उसको इस दुनिया में कुछ चाहिए नहीं वैसे। क्योंकि वो जीरो माना सम्पूर्ण है। जो चीज सम्पूर्ण है उसको बाहरी अचीवमेंट से, बाहरी दिखावे से, बाहरी बातों से लेना-देना नहीं है। लेकिन लम्बे समय से इस बात का अनुभव हमें नहीं है। तो आज

मुझे अच्छा या बुरा नहीं लगेगा। मुझे कोई कुछ बोले ना बोले, मिले ना मिले, कोई मेरी तारीफ करे ना करे लेकिन फिर भी मैं उसी अवस्था में रहूँगा, उसको ही अनुभूति कहते हैं उसके ओरिजनल स्वरूप को। उदाहरण के लिए, एक साल का या दो

साल का छोटा बच्चा उसको चाहे अच्छा बोलो, बुरा बोलो वो हैसता है, भूल जाता है क्योंकि वो उसकी ऑरिजिनल स्ट्रेज है। इसलिए वो हमेशा प्यारा लगता है, खींचता है, आकर्षित करता है और उसकी बात भी हम मानते हैं। जो जो हमको इशारा करता है, हम करते हैं। वैसे ही तोतली भाषा में बात भी करते हैं क्योंकि उसको शरीर याद ही नहीं है। माना दूसरी आइडेंटिटी याद ही नहीं है कि मेरी कोई और भी पहचान है। लेकिन हम सबको ज्ञान मिलने के बाद भी वो केवल सूचना तक रह गई, जानकारी तक रह गई। उसको अनुभव बच्चे की तरह ना करके हम निमित्त भाव, निर्माण भाव नहीं ला पाते हैं। इसलिए लोगों को हम सभी से कुछ नहीं मिल रहा है। छोटी-छोटी बातों का तो हमें बुरा लग जाता है। अब यही चीज हम सभी को अनुभव में लानी है कि जो हम हैं, जो हम नहीं हैं उसको व्यावहारिक तरीके से अनुभव में लाना है। यही अनुभव की कमी सफलता नहीं दिला रही है। उसी को परमात्मा कहते हैं आत्मिक भाव, वृत्ति वाला भाव, शुद्ध भाव, क्योंकि बच्चे का शुद्ध भाव होता है। उसको किसी भी राज्य से, धर्म से, जाति से कोई लेना-देना नहीं है। बस यही अनुभूति हम सबकी होगी तो हमसे प्रार्थियां शुरू होंगी।

दूसरा उदाहरण हम ऐसे लेते हैं, जैसे हम मंदिर जाते हैं, हर देवी-देवता हमें अपना नज़र आता है ना! क्योंकि उसके अन्दर कोई वर्गीकरण नहीं है, भेदभाव नहीं है। लेकिन इसका अभ्यास कभी तो किया होगा और वो अभ्यास अनुभव में है। वो ही अनुभव आपसे वैसे चित्र बनवाता है और एक चित्रकार वैसी ही पेंटिंग बनाता है, और वो ही अनुभव आप मंदिरों में करते हैं। इसको कहा जाता है- निमित्त भाव। अब आप सोचो कि अगर कोई देवता कहे कि कि आप यहाँ के हैं, आप वहाँ के हैं, आप इस जाति के हैं, इस धर्म के हैं तो आपको अच्छा लगेगा! नहीं लगेगा ना! ये सिद्ध करता है कि ये इनका आत्मिक भाव है, शुद्ध भाव है, वृत्ति में शुद्ध भाव है। यही अनुभूति हम सबसे चैतन्य में लोग चाहते हैं और परमात्मा हमको यही अनुभूति में रहने के लिए कहते हैं। तो आप अनुभवी बनो, ना कि जानकार बनो। यही जीवन का हमारा लक्ष्य हो।

प्राप्त : मेरा नाम प्रियंका है। मैं फ़िरार में रहती हूँ। जब मैं घर से बाहर जाती हूँ तो कुछ लोग गलत टॉलिंग करते हैं, लेकिन डर लगा रहता है कि कहीं कोई कुछ कर न दे। मैं शक्ति रूप हूँ, ऐसा अनुभव करती हूँ। लेकिन फिर भी जब घर आती हूँ तो बहुत डरावने विचार मन में आते हैं, क्या करें?

उत्तर : ये समस्या अभी बहुत बढ़ गई है। लेकिन अगर उपरोक्त बनेंगे तो, कुत्ते होते हैं ना उनसे उसके आप भागने लगे तो कुत्ते पीछा करते हैं। अगर खड़े हो जाओ जम के तो सारे कुत्ते भाग जायेंगे। तो थोड़ा निर्भय बनके भी रहना है ताकि उन लोगों को ये महसूस न हो जाये कि ये बहुत

एग्जीबिशन लगती है ना, स्पिरिचुअल एग्जीबिशन सबको परमात्म संदेश देने के लिए, तब वो समझाया करें सबको। भले छोटा ग्रुप हो, गाँव की माताओं को ही लेकर चलें और धीरे-धीरे आपकी प्रैक्टिस



मन की बातें

हैं तो उन्हें कहीं बगीचे में जाकर भाषण करना चाहिए, इब्राहिम लिंकन की तरह दस मिनट। सब मेरे सामने खड़े हैं और मैं उनको भाषण कर रहा हूँ। और स्वमान की प्रैक्टिस तो सभी कर ही सकते हैं।

मैं सर्वशक्तिवान की संतान मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। ये स्वप्न जो है वो एक बहुत सुन्दर फीलिंग है, एक जागृति है। इसको फील करना है, इसको एम्बेड करना है। मैं सर्वशक्तिवान की संतान होने के नाते मैं बहुत पावरफुल हूँ। मैं हूँ। मैं कमजोर नहीं हूँ। सर्वशक्तिवान के बच्चे कमजोर नहीं हो सकते हैं। ये अव्येरनेस, ये डीप फीलिंग हो। जब हम ये स्वप्न का अभ्यास करते हैं तो जो पावर सुषुप्त अवस्था में है, वो जागृत हो जाएगी। लेकिन जिनसे ये सब नहीं होता तो उनको बैठकर लिख लेना चाहिए 108 बार। अगर 108 बार नहीं लिख सकते तो 21 बार लिख लेना चाहिए। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। अगर 21 बार लिखने में तीन-चार मिनट लगते हैं और उसमें मन एकाग्र हो जाता है तो शक्तियाँ वायब्रेट आउट होने लगेंगी और इससे बहुत फायदा होगा। बात अनुभूति की है। एक और चीज सब्कोन्शियस माइंड का प्रयोग है। आँख खुलते ही सात बार याद कर लें मेरी शमीली नेचर समाप्त हो गई है। मैं बहुत ओपन हो गया हूँ। मैं सबके सामने अच्छे से बोल सकता हूँ। ये संकल्प तीन-चार-पाँच बार कर लें। तो ये सब सब्कोन्शियस माइंड उस नेचर को समाप्त करने में बहुत मदद करेगा।

परन : मैं तीन साल से ब्रह्माकुमारजी से जुड़ी हुई हूँ और मैं डॉस के फील्ड में काम करती हूँ। मुझे रोज़ ही लाइव थो देना होता है। जब मैं थुरुआत घबै थी तो बहुत अलग परफॉमेंस करती थी लेकिन धीरे-धीरे मेरी परफॉमेंस बिक होती जा रही है। इसको मैं कैसे सधाऊँ?

उत्तर : बहुत अच्छी एक बात सामने आई है क्योंकि कोई भी डांसर हो या सिंगर हो तो जरूर वो चाहेंगे कि ऐसा हो कि दिन-प्रतिदिन निखरती जाये उनकी ये कला।

पर अगर किसी के साथ ऐसा होता है कि वो कला थोड़ी डाउन होती जा रही है, लोग लाइक नहीं कर रहे हैं तो अपनी कला को सुधारना चाहिए, और ज्यादा प्रैक्टिस करनी चाहिए। वो डांस करना है तो ये ऐसे मग्न होकर डांस करने लगे, अपने घर में प्रैक्टिस करें कि मैं अपना डांस भगवान के प्यार में कर रही हूँ। उसके सामने कर रही हूँ। ये सामने जो गीत चल रहा है वो भी उसकी महिमा का हो। उसको प्रसन्न करने के लिए मैं डांस कर रही हूँ। इससे इनके डांस में और रिफ़ाइननेस आ जाएगी। चमक आ जाएगी। प्रैक्टिस भी बहुत अच्छी है और जब ये स्टेज पर जायें तो तीन बार याद कर लें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और ये मेरा प्रोग्राम शिव बाबा आपको समर्पित है। अब आप भी मेरे डांस का आनंद लें। इस फीलिंग से, उसको भी साक्षी बनाकर ये डांस करेंगे लेकिन पहले प्रैक्टिस भी अच्छी कर लें और सुधार कर लें। तो निश्चित रूप से सफल होंगी।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की छुली और कच्ची लसि के लिए देखें आपका
आपना 'पैर ऑफ माइंड' और 'अलेक्जेंडर' टेनिस

उपलब्ध पुस्तकें



जो आपके जीवन को बदल दे

 पितृव्य प्रणाम	 सत्यमेव जयते	 जीवन शक्ति
 हँसी लिखिनी	 हेपिनेस इन्डिया	 नीला मानसु वायुमण्डल रहस्य
 सत्य ज्ञान का सत्य	 सत्य आदेश	 सत्य योग
 सत्य ज्ञान का सत्य	 सत्य आदेश	 सत्य योग

डरपीके है। घर से चलते हुए कुछ अभ्यास कर लें सात बार कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। और सर्वशक्तिवान की सर के ऊपर छत्रछाया है। इस गुड फीलिंग में बैठें और इस नशे और स्वप्न के साथ घर से बाहर निकलें कि मेरे साथ सर्वशक्तिवान है। वो मेरा बॉडीगार्ड है। तो बाबा के महावाक्य हैं, जहाँ तुम बाप से इस तरह कम्बाइंड रहोगे तो किसी का संकल्प भी नहीं उठेगा कि तुम्हें कुछ करें। तो लोग सब दूर चले जायेंगे, ऐसे बहुतों के अनुभव हैं। फिर उसके बाद कोई दिखाई नहीं दिया आस-पास। ये करके चलेंगे तो भय भी खत्म हो जायेगा और सबकुछ सुरक्षित होगा।

प्रश्न : मैं पिछले छह मास से आपका सम्मान प्रोबाम दे रहा हूँ। राजयोग से मुझे बहुत फायदा भी हुआ है। मैं आपके साथ अपनी एक प्रॉब्लम शेयर करना चाहता हूँ कि मुझे बचपन से ही लोगों से बात करने में डर लगता है, रीशियली लड़कियों से। अब मेरे पास बड़ी प्रॉब्लम ये है कि मेरे अन्दर बहुत डर का भाव है और मैं बहुत रीसिटिव भी हूँ। मैं इससे मुक्त होना चाहता हूँ।

उत्तर : कई बच्चे बचपन से ही शर्माते नेचर के होते हैं। किसी से बात करते हुए उन्हें बात करना ही ना आये। बल्कि डर जायें और बात क्या करनी थी वो भी भूल जायें। हमारे यहाँ पर बहुतों के एक्सपीरियंस हुए कि ऐसे जब उनकी मनोस्थिति थी तो उनको मैंने सजेस्ट किया कि जब हमारी

होगी और ये हिचक निकलती जायेगी। और जब सभी से ऐसे कथ्युनिकट करेगे, उनसे बातचीत जब होगी तो जो भय बना रहता है, या शाई नेचर हो जाती है लड़कों की, कि इससे कैसे बात करूँ ये बड़ा आ गया। इससे बात करने का हौसला बढ़ेगा। और दूसरा इनको बहुत ज्यादा अभ्यास करना चाहिए स्वमान का। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और सामने वो जिससे बात कर रहा है वो न स्त्री है, न पुरुष है, न लड़का है, न लड़की है वो तो एक चेतन आत्मा है। ये प्रैक्टिस पहले से ही बढ़ाएं। काल्पनिक रूप से बढ़ाएं घर बैठे भी, कि मैं इससे बात कर रहा हूँ, ये सब आत्माएं हैं। सब भगवान के बच्चे हैं और मैं हूँ मास्टर सर्वशक्तिवान। तो धीरे-धीरे आपका ये शाई नेचर समाप्त हो जायेगा। जो ज्ञान मैं हूँ वो तो ऐसा अभ्यास कर लेंगे। लेकिन जिन्होंने ज्ञान नहीं लिया